Indian J. Soc. & Pol. 05 (I):2018:75-78 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत–पाक सम्बन्ध : तनाव के प्रमुख विन्दु

धर्मेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव[1a]

[a]प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा गाजीपुर उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

भारत और पाकिस्तान के पारस्परिक सम्बन्धों का इतिहास इर्ष्या, घृणा, तनाव, कटुता, अविश्वास, कूटनीतिक धृष्टता तथा एक–दूसरे को सदैव नीचा दिखाने की कुत्सित प्रवृति की धुंधली छाया से घिरी दास्तान है। यूँ तो पाक की पैदाईश भारत के गर्भ से ही हुआ है परंतु जच्चा और बच्चा के बीच जो रिश्ता–ए–मुहब्बत होना चाहिए, जो दोस्ताने सलूक बनने चाहिये, वह कभी नहीं बन पाया। इसका मुख्य कारण यह रहा कि भारत ने इस गर्भ को स्वेच्छा से धारण नहीं किया था, फलतः प्रसवकाल अत्यंत पीड़ादायक एवं मर्मांतक रहा तथा विश्व के नक्शे पर पाकिस्तान रूपी जिस शिशु का अवतरण हुआ वह पैदाइशी एहसानफरामोश साबित हुआ। द्विराष्ट्र सिद्धांत एवं साम्प्रदायिकता के आधार पर निर्मित पाक की जन्म कुंडली ही ऐसी रही है और यही बात भारत–पाक सम्बन्धों को निर्धारित करने वाली नियामक रही है। चाहे वह अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक दाव–पेंच हो या घरेलू राजनीति की शतरंजी चालें, भारत, पाक के लिए एक मोहरा बना हुआ है तथा भारत–विरोध पाक की नियति बन गई है।

***KEYWORDS**: भारत, पाकिस्तान, कश्मीर, आतंकवाद, छद्म युद्ध*

भारत और पाकिस्तान की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा भाषायी दृष्टि से अत्यधिक समानता होने के बावजूद इनके आपसी सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अद्भुत सम्बन्ध हैं, जिसमें मैत्री सहयोग,प्रेम और माधुर्य 'रेगिस्तान में नखलिस्तान' की तरह या बादल में चमकने वाली विजली की तरह अत्यंत अल्पकालिक रहा है। जबकि संदेह, अविश्वास, द्वेष और घृणा का वातावरण इसकी स्थायी प्रकृति है। भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के सन्दर्भ में वी0पी0दत्त का यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि ''भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध राष्ट्रीय पुर्वाग्रहों गर्वित मनोभावों, घायल अहं और सपाट प्रतिद्वन्दिता का जटिल सम्मिश्रण है।'' अध्ययन अवधि 1990 से अब तक में जबकि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। जर्मनी का एकीकरण, उत्तरी कोरिया दक्षिण कोरिया के बीच सिमटती दूरी और सबसे अधिक उदारीकरण का प्रभाव,जिसने राष्ट्रीय सीमाओं की अवधारणा को ही समाप्त कर दिया है, इसके बावजूद भी भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध में कोई विशेष सकारात्मक प्रगति दिखायी नही दे रही है।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध मूलतः परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों के कारण तनावपूर्ण रहे हैं। भारत का पाकिस्तान के प्रति दृष्टिकोण सदैव मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का आकांक्षी रहा है इसीलिए उसने सन् 1948 में कश्मीर में युद्धविराम को स्वीकार कर लिया, जबकि वह यदि चाहता तो अपनी सैनिक कार्यवाही जारी रखते हुए पूरे कश्मीर को पाकिस्तान के नियंत्रण से मुक्त करा सकता था। उसने विभाजन के परिणामस्वरूप पैदा हुई सम्पत्ति की समस्याओं एवम् सिन्धु नदी के जल के बंटवारे की समस्या का भी शांतिपूर्ण निवटारा किया । अपनी शांतिपूर्ण मनोवृत्ति के तहत ही उसने पाकिस्तान से सन् 1950 में अयुद्ध सन्धि की पेशकश भी की। ताषकंद समझौते तथा शिमला समझौते के समय विजयी राष्ट्र होने के बावजूद उसने पाकिस्तान को बराबरी का स्तर प्रदान किया तथा पाकिस्तान की पराजय व पराभव का कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया। अध्ययन अवधि 1990 से अब तक में भी भारत का यही दृष्टिकोण बना रहा। मई 1997 में मालद्वीव में भारतीय प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने बड़े विनम्र शब्दों में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ से मैत्री का प्रस्ताव रखा– ''..... ..... पिछले पचास वर्षों में हम एक दूसरे से लड़ते रहे और देखिये हम कहां हैं आगामी 50 वर्षों में हमें इससे भिन्न दृष्टिकोण अपना कर देखना चाहिए।'' प्रधानमंत्री वाजपेयी ने भी मैत्री की घोषित नीति के तहत पाकिस्तान की यात्रा किया, पाकिस्तान को भारत से सड़क मार्ग से जोड़ा तथा कारगिल के खलनायक जनरल परवेज मुशर्रफ को शांति की आकांक्षा के साथ ही आगरा में महिमामण्डित किया ।

दूसरी ओर पाकिस्तान भारत विरोध की धारणा से ग्रसित रहा उसका यह दृष्टिकोण मुख्यतः इस मनोवैज्ञानिक मिथक से प्रभावित रहा कि भारत के हिन्दू , भारत विभाजन से संतुष्ट नहीं हैं और किसी उपयुक्त समय परवे इसे समाप्त करना चाहते हैं। इस मूलभूत मिथक से अनेक अन्य मिथक भी उत्पन्न हुए। जैसे भारत की विदेश नीति का एक मात्र उद्देश्य पाकिस्तान को कमजोर और अलग थलग करना हैं अथवा भारत ने कश्मीर पर आक्रमण किया है और एक दिन ऐसा ही आक्रमण पाकिस्तान पर करके पाकिस्तान को समाप्त कर सकता हैताकि पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर हिन्दू प्रभुत्व स्थापित किया जा सके

1: Corresponding Author

। इन्ही मिथकों के कारण पाकिस्तान भारत से खतरा महसूस करता रहा है जो वास्तविक कम काल्पनिक अधिक है। अपने इसी दृष्टिकोण के कारण पाकिस्तान ने अमरीका के नेतृत्व में निर्मित सीटो एवम् सेण्टों नामक सैन्य संगठनों की सदसयता ग्रहण की तथा तदुपरांत चीन के साथ घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध स्थापित किये । उसने भारत विरोधी देशों से सम्बन्ध स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया तथा साम्यवाद विरोधी संगठनों का सदस्य होने के बावजूद साम्यवादी चीन के नजदीक बना रहा। जो 1962 के भारत चीन युद्ध के बाद विल्कुल सैन्य गठबंधन के जैसा हो गया। उसने भारत के साथ किसी विवाद की स्थिति में इस्लामी राज्यों से सहयोग के लिए ही इस्लामी एकता के नाम पर इसलामी राज्यों विशेष रूप से अरब राष्ट्रों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रखा।

भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के अध्ययन के बाद यह तथ्य उद्धरित हुए है कि प्रमुख रूप से दो विन्दु ऐसे हैं जिनसे भारत पाकिस्तान सम्बन्ध प्रभावित होता रहा है और जो दोनो देशों के सम्बन्ध में तनाव के विन्दु के रूप में परिलक्षित होते रहे हैं । प्रथमतः **आंतरिक अंर्तविरोध** तथा **द्वितीयक अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ।**

आन्तरिक अन्तर्विरोध के अन्तर्गत तनाव के प्रमुख कारण के रूप में निम्नलिखित विन्दु महत्वपूर्ण रहे हैं –

राष्ट्र निर्माण के दृष्टिकोण में अन्तर

भारत एवम् पाकिस्तान के राष्ट्र निर्माण के दृष्टिकोण में ब्यापक विषमता है। भारत ने अपने राष्ट्र निर्माण के आधार स्वरूप सामाजिक व सांस्कृतिक बहुलबाद को अंगीकार किया जिसके अनुसार बहुधार्मिक,बहुभाषी, व सांस्कृतिक विविधताओं को मान्यता दी गयी। अपनी अनेक कमियों के बावजूद भारतीय समाल एक खुला व बहुलवादी समाज है जिसमें सभी को स्वतंत्रता एवम् समानता प्राप्त है। इसके विपरीत पाकिस्तान ने अपने राष्ट्र के निर्माण के आधार स्वरूप धर्म को क्रियाशील एवम् मुख्य सिद्धान्त के रूप में अपनाने पर बल दिया और अन्य विकल्पों के लिए पहले ही द्वार बंद कर दिये । दोनो राष्ट्रों के राष्ट्र निर्माण के दृष्टिकोण में अन्तर होने के कारण इनकी जनमानसिकता में भी एक दूसरे के प्रति विरोध के ततव अभिसिंचित होते रहे हैं। जिन्होने अन्ततः भारत के साथ उसके सम्बन्ध को दुष्प्रभावित किया है।

वैचाारिकी में अन्तर

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस उपमहाद्वीप में दो तरह की विचारधारायें उभर कर सामने आयीं। समन्वित राष्ट्रीयता और धार्मिक साम्प्रदायिकता। समन्वित राष्ट्रीयता, भारतीय विचारधारा की आधार बनी जिसका बल धर्मनिरपेक्षता पर था। यद्यपि भारत में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई विभिन्न साम्प्रदायिकताओं के कारण संघर्ष करना पड़ रहा है , आज भी बाबरी मस्जिद, ग्राहम स्टेंस और गोधरा जैसी धटनायें होती रहती हैं परन्तु भारतीय विचारधारा की धर्मनिरपेक्षता में आस्था असंदिग्ध है। इसके विपरीत पाकिस्तान इस्लाम आधारित विजयी धार्मिक शक्तियों से घिरा हुआ है। पाकिस्तान में संकीर्ण साम्प्रदायिकता जिसके अब इस्लामी रूढ़िवाद कहा जाता है, पंथ निरपेक्ष लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना में अवरोध उत्पन्न कर रही है।यह केवल लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को ही प्रभावित नही करती अपितु अब तो इसने सैन्य शासन को भी परेशान करना प्रारंभ कर दिया है। आतंकवाद के मुद्दे पर अमरीका का समर्थन करने पर पाकिस्तान सरकार के विरूद्ध जनता में विद्रोह की भावना इसी विचारधारा की परिचायक है। परस्पर विरोधी विचारधाराओं के कारण ही भारत तथा पाकिस्तान के मध्य किसी विन्दु पर सहमति नही बन पाती जिसके परिणामस्वरूप दोनो देशों के सम्बन्ध तनावपूर्ण होते रहे हैं।

व्यवस्था में अन्तर

अध्ययन से यह स्पष्ट है कि दोनो देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं में भी पर्याप्त रूप से मतभेद हैं । स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ही भारत में लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था को अंगीकार किया गया था और आज तक यह दिनोदिन और अधिक मजबूत होती जा रही है। यद्यपि गुणवत्ता की दृष्टि से इसमें भी ह्रास हुआ है और विधायिकाओं तथा कार्यपालिकाओं में भ्रष्टाचार का रोग पनपा है तदपि इसकी जड़ें प्रजातंत्र में गहरी उतरी हुई हैं और आज यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में प्रतिस्थापित हो गया हैं। इसके विपरीत पाकिस्तान की त्रासदी यह है कि उसे अपने लोकतंत्र को मजबूत बनाने का अवसर ही नही मिला। उसने जब भी लोकतांत्रिक व्यवस्था अंगीकार करने का प्रयास किया या तो लोकतंत्र की भ्रूण हत्या कर दी गयी या फिर यौवनावस्था आने से पूर्व शैशवावस्था में ही उसे दफन कर दिया गया। पाकिस्तान में सैनिक शासन अत्यधिक काल तक प्रभावी रहा है लोकतंत्र यदि रहा भी है तब भी सैन्य अधिकारियों ने छाया सरकार चलायी है।

मीडिया की भूमिका

लोकमत के निर्माण के सन्दर्भ मे मीडिया की भूमिका द्विपक्षीय होती है एक तरफ तो वह लोकमत का निर्माण करती है और दूसरी ओर वह लोकमत की अभिव्यक्ति भी करती है, परन्तु यह धारण केवल लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था वाले देशों में ही अधिक फलीभूत हो पाती है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि गैर प्रजातांत्रिक देशों में मीडिया सरकारी प्रचार का साधन मात्र बनकर रह जाती है और उसका कार्य मात्र शासकीय नीतियों के अनुकूल लोकमत का निर्माण करना हो जाता है। भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के सन्दर्भ में भी पाकिस्तानी मीडिया की भूमिका कुछ इसी तरह की रही है। पाकिस्तानी मीडिया जिस तरह से भारत विरोध की भावना से ग्रस्त हैं उसने पाकिस्तानी

जनता के मन में भारत के प्रति संदेह व अविश्वास को ही बढ़ावा दिया है। पाकिस्तानी मीडिया के दृष्टिकोण में समस्याओं के समाधान का केवल एकमात्र विकल्प रहा है –युद्ध। विशेषकर कश्मीर के सन्दर्भ में तो इसका पोषण 1948 से ही हो रहा है। उदाहरण स्वरूप पाकिस्तान के समाचारपत्र जमींदार के 17 जनवरी 1952 को प्रकाशित अंक की एक टिप्पणी – ' यदि संयुक्त राष्ट्र संघ चोरों का एक गिरोह सिद्ध होता है तो हमें उससे कुछ भी लेना नही है। हमें यह सिद्ध करना पड़ेगा कि हम अपनी सैन्य शक्ति के माध्यम से कश्मीर को स्वतंत्र करा सकते हैं ' पाकिस्तान की मीडिया से प्रभावित होकर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था वाले देश भारत की मीडिया भी अब अपनी मर्यादाओं से परे जा रही है।

कश्मीर

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि अध्ययन अवधि में कश्मीर विवाद की मुख्य प्रवृत्ति कश्मीर को विवादित मानने और न मानने की रही है। इस पूरी अवधि के दौरान जहां पाकिस्तान कश्मीर को विवादित क्षेत्र के रूप में प्रचाारित करता रहा, वहीं भारत ने इसे लगातार अपना अटूट एवम् स्वाभाविक अंग बताया है। पाकिस्तान का जहां यह अभिमत रहा है कि कश्मीर समस्या के समाधान के बाद ही भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध सामान्य हो सकते हैं वहीं भारत का स्पष्टतः दृष्टिकोण रहा है कि कश्मीर समस्या तो है ही नहीं और भारत–'पाकिस्तान सम्बन्ध सामान्य होने के बाद भारत,पाकिस्तान के बीच यदि कश्मीर बाधक है भी ,तो उसका अंत हो जायेगा।

शोधार्थी का अभिमत है कि दोनो ही राष्ट्र कश्मीर के सन्दर्भ में अतिरंजित दृष्टिकोण अपनाये हुए हैं जिससे उनके सम्बन्ध तनावपूर्ण बने हुए हैं । वास्तव में पाकिस्तान का यह मानना कि कश्मीर ही भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध की एकमात्र कुंजी है ,पूर्णतया अनौचित्यपूर्ण है। उनके दृष्टिकोण एवम् उनकी कार्यवाहियों से ऐसा लगता नहीं कि पाकिस्तान का कश्मीर या कश्मीरियों से कोई भावनात्मक लगाव है। उनके लिए तो कश्मीर केवल सत्ता पाने और सत्ता में बने रहने का साधन मात्र है। इस तथ्य की पुष्टि पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ की आगरा यात्रा के समय इस स्वीकारोक्ति से ही हो जाती है कि ''यदि मैं कश्मीर का मुद्दा छोड़ दूं तो मुझे पुनः नाहरवाली हवेली में आकर रहना होगा।'' कश्मीर के प्रश्न पर भारतीय दृष्टिकोण भी अतिरंजित है जो यह मानने के लिए तैयार नही है कि कश्मीर भारत पाकिसतान के मध्य कोई समस्या है। वास्तव में समस्या तो है और भारत की भूल के कारण ही अब तक बना हुआ है। यदि भारत ने कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में न उठाया होता, यदि वह 1948 में पूरे कश्मीर को खाली कराये बिना युद्ध विराम समझौते पर सहमत न हुआ होता तथा यदि शिमला समझौते के अवसर पर अतिशय आदर्शवादिता का दृष्टिकोण न अपनाया गया होता तो निश्चित रूप से कश्मीर कोई समस्या नही होता परन्तु चूकि यह सब हुआ है इसलिए भारत को भी यह माानना होगा कि कश्मीर समस्या है और भारत–पाकिस्तान सामान्य सम्बन्ध के लिए इसका समाधान होना भी अन्य समस्याओं के साथ ही अनिवार्य है।

आतंकवाद

आतंकवाद भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध की सबसे बड़ी वीभत्स समस्या रही है। वास्तव में भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध में आतंकवाद पाकिस्तानी महात्वाकांक्षाओं की देन है। पाकिस्तान कश्मीर के लिए प्रारंभ से ही महत्वाकांक्षी रहा है इसके लिए उसने सशस्त्र संघर्ष का रास्ता भी अख्तियार किया परन्तु जब वह इसमें सफल न हो सका तो छद्म युद्ध का सहारा लिया। भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध की यह विडम्बना ही है कि यह आतंकवाद जैसी हिंसक गतिविधि से संचालित हो रहा है। पाकिस्तान इन हिंसक गतिविधियों को स्वतंत्रता संघर्ष का नाम देता है तो कभी जेहाद के नाम से इसे महिमामण्डित करता है। भारत की आपत्ति यह है कि इस क्रियाविधि का जेहाद अथवा स्वतंत्रता संघर्ष जैसी अवधारणओं से कहीं कोई सम्बन्ध नहीं है। यह विशुद्धतः आतंकवाद है और पाकिस्तान प्रायोजित और उसी द्वारा पोषित है। शोधार्थी का अभिमत है कि नित्य प्रति होने वाली हत्या, हिंसा की घटनाओं को स्वतंत्रता संघर्ष अथवा जेहाद की संज्ञा से संज्ञायित नही किया जा सकता और ऐसा करके भी इसकी आपराधिक प्रवृत्ति को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता। वास्तव में यह आतंकवाद है और भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध में इसकी भूमिका दीमक की तरह है जो दोनो राष्ट्रों के सम्बन्ध सुधार की किसी भी संभावना को सिरे से नकार दे रही है।

परमाणु कार्यक्रम

दोनो देशों के परमाणु कार्यक्रम भी एक दूसरे के साथ सम्बन्ध के निर्धारण में बाधक सिद्ध हुए हैं। परमाणु कार्यक्रमों के सन्दर्भ में एक दूसरे के प्रति संदेह एवम् अविश्वास दोनो ही देशों के मनःस्थल में रहा है। भारत के शांतिपूर्ण परमाणु कार्यक्रम को पाकिस्तान ने सदैव अपने लिए खतरा माना और स्वयं को नाभिकीय हथियारों के दौड़ में लगाये रखा। समय समय पर परमाणु कार्यक्रम को लेकर पाकिस्तान द्वारा धमकी भरे बक्तब्य दिये जाते रहे। परमाणु कार्यक्रमों के इस गतिरोध ने ही इन दोनो देशों को शस्त्र प्रतिस्पर्धा में लगाये रखा जिसके कारण ये दोनो देश अपनी पूंजी का प्रयोग अनुत्पादक सैन्य सामग्री पर करते हैं। 1998 में इसकी चरम परिणति हुई और अन्ततः दोनो देश परमाणु शक्ति सम्पन्न हों गये। फिरभी इनके सम्बन्ध सामान्य न हो सके । वास्तव में बारूद की ढेर पर बैठकर मैत्री की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी इसी कारण परमाणु कार्यक्रम पूरी अध्ययन अवधि के दौरान भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध में गतिरोध का कारण बना रहा।

उपरोक्त विन्दुओं के अतिरिक्त भी अनेक ऐसे विन्दु रहे हैं जिन्होने अध्ययन अवधि में भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध कों प्रभावित किया है। इनमें सियाचीन विवाद,सर क्रीक विवाद दोनो देशों की कूटनीति में मूलतः विरोधाभास तथा इनके सामरिक दृष्टिकोण इत्यादि रहे हैं। सियाचीन विवाद भैतिकीय और मानवीय दोनो ही दृष्टियों से विश्व का सबसे बड़ा बेवजह का विवाद है यह विवाद सीमांकन न हो पाने की वजह से है। इस विवाद का परिणाम रहा है कि दोनो ही देशों की सियाचीन स्थित विश्व की सबसे उंची सामरिक चौकी पर जितने सैनिक गोलियों से नहीं मरे हैं उससे अधिक ठंढ की वजह से मर गये हैं ।

भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि इसका एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ भी रहा है जिसने इसे प्रभावित किया है। इस सन्दर्भ में निम्न बातें महत्वपूर्ण रही हैं –

शीतयुद्ध की नीतियों ने भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध को बहुत गहराई से प्रभावित किया है। भारत और पाकिस्तान जब स्वतंत्र हुए उस समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शीतयुद्ध का प्रारंभ हो गया था। विश्व की दोनो महाशक्तियां, दक्षिण एशिया की शक्ति रिक्तता को भरने का प्रयास कीं और दक्षिण एशिया के इन राष्ट्रों के सम्बन्धों में दिलचस्पी दिखायीं। प्रारंभ में भारत ने गुटनिरपेंक्षता का रास्ता अपना कर अपने को शीतयुद्ध से अलग रखने का प्रयास किया वहीं पाकिस्तान ने गुटवद्धता की नीति का अनुगमन किया और अनेक सैनिक संधियों का सदस्य बन गया। उसने इन सैनिक सन्धियों को दक्षिण एशियाई शक्ति संतुलन की दृष्टि से अनिवार्य माना। उसकी इन कार्यवाहियों ने भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध को शीतयुद्ध, का तत्व बना दिया।जिसके परिणामस्वरूप इनके सम्बन्ध भी शीतयुद्धकालीन नीतियों से प्रभावित होते रहे। यद्यपि अध्ययन अवधि के पहले ही शीत युद्ध का अंत हो गया था तदपि उसके प्रभाव अध्ययन अवधि में भी पड़ते रहे हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि इन दो पड़ोसी राष्टों के दुराग्रहपूर्ण सम्बन्धों ने सम्पूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र के पड़ोसी राष्टों के हितों को प्रभावित किया है। इन दो देशों के दुराग्रहपूर्ण सम्बन्धों से अविश्वास, आशंका,और घृणा का वातावरण सृजित हुआ है। जिससे इस क्षेत्र के समस्त पड़ोसियों में एक अनजाना सा भय समाया हुआ है। इसी कारण न तो इस क्षेत्र में द्विपक्षीय सम्बन्ध ही मधुर हेा पाये हैं और न ही इस क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग की प्रक्रिया ही स्ुल हो पायी है। सार्क को आशानुकूल सफलता न मिल पाना भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के तनाव का ही परिणाम रहा है ।

भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को पंक्तिबद्ध करते हुए यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि ''अनिश्चित काल से सांस्कृतिक, आध्यात्मिक,सामाजिक तथा राजनैतिक रूप से एक रही भूमि को दो भागों में बांट दिया गया । यही दो भाग भारत और पाकिस्तान के रूप में विश्व मानचित्र पर उभरे, यह औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी शासकों की ही देन थी । उन्होने हमेशा हमेशा के लिए भारत–पाकिस्तान के मध्य तनाव के कुछ कारणों को छोड़ दिया । पाकिस्तान यह महसूस करता रहा कि, भारत में मुसलमानों को हिन्दुओं की तरह समानता प्राप्त नही है तथा वे दोयम दर्जे के नागरिक समझे जाते हैं । विभाजन के बाद इन दोनो देशो के बीच कुछ समसयायें उत्पन्न हुईं जिन्होने इनके सम्बन्धों को निर्धारित किया । ये दोनो देश शांतिपूर्वक रहकर अन्तर्राष्टीय शांति एवम् दक्षिण एशिया की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते थे और इस क्षेत्र में आर्थिक सहयोग और उन्नति के महत्वपूर्ण युग के अग्रदूत हो सकते थे परन्तु इन दोनो देशों की पारस्परिक शत्रुता ने पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र की शांति एवम् समृद्धि को प्रभावित किया है। इन दोनो देशो के तनावपूर्ण सम्बन्धों ने इस उपमहाद्वीप को महाशक्तियों की लड़ाई के लिए अखाड़ा बना दिया है। जिससे इस क्षेत्र के देशों के ब्यक्तिगत तथा सामूहिक हित प्रभावित हुए हैं।

सन्दर्भ

अली, ए (1984) *पाकिस्तान न्यूक्लियर डायलेमा, इनर्जी एण्ड सिक्यूरिटी डायमेन्सन,* कराची

अकबर, एम0के0 (1997) *पाकिस्तान : फ्राम जिन्ना टू शरीफ,* नई दिल्ली, मिततल

अस्थाना, बन्दना (1999) *इण्डियाज फारेन पालिसी एण्ड सबकान्टिनेन्टल पालिटिक्स,*न्यू डेलही, स्टर्लिंग

अजीज, के0 के0 (1967), *दी मेकिंग आफ पाकिस्तान,* लंदन, चटटो एण्ड विन्डो